**कहानी**

- जी. पद्मजा

## उजडी जिंदगी

रात के अंधेरे में बूढ़ी विधवा मां काट पर बैठी हैं। अपने बेटे मोहन की इंतजार कर रही हैं। घर के सामने दो छोटी लड़कियां खेल रही हैं। विधवा मां अपनी बहू को बुलाती है शारदा... ओ शारदा... अंदर से आवाज निकलती है– आई सासू मां ... थोड़ी देर के बाद हाथ में सुई से फटे पुराने कपड़े सीती हुई आई। क्या बात है सासू मां ...?

बूढ़ी – देर हो रही है, मोहन अभी नहीं आया बच्चों को भोजन खिलादो।

शारदा – मां ओ क्या है कि– घर में चावल नहीं .रोटियां बनाऊं तो आटा भी नहीं। मैं भी उनके इंतजार में हूं। आते वक्त चावल या आटा ले आने के लिए बोली थी।

इतने में बड़ी बच्ची सुप्रिया भागती हुई आई, मां.... भूख लग रही है। उसके पीछे– पीछे 2 साल की भव्या तोतलाती हुई बोली– मां मुझे भी लोटी... शारदा को ऐसी दयनीय स्थिति में भी अपनी नन्हीं बेटी की बातों से प्रेम मोड़ पड़ी। सुई,धागा दूर रखते हुए भव्या को गले में ले ली। वह प्यार तो बहुत बरसा सकती है लेकिन उन बच्चों की भूख नहीं मिटा सकती है।

बिजली के खंबे के पास खेलती हुई हरिप्रिया चिल्लाई– बापू आ राय ... मोहन हाथ में थैली लेकर आ रहा था। सुप्रिया और हरिप्रिया भागते हुए मोहन के पास पहुंचे। बड़ी बेटी सुप्रिया पिताजी से थैली ले ली। छोटी हरिप्रिया भी थैली छीनने की कोशिश की। मोहन उसे रोक दिया । कहता है कि "उसमें चावल है गिरा दोगे तो रात को भूखे सोना पड़ता है बड़ी बहन को लेने दो "सुप्रिया खुशी से थैली हाथ में लेकर चलते– चलते अचानक याद आने से पूछी कि– बापू मेरे लिए किताब लाना था लाए हो ? मोहन के चेहरे पर से हंसी उड़ गई। वह बोल नहीं सकता किताब खरीदने के पैसे नहीं हैं।

सुप्रिया बापू की छुपी देखकर, समझ गई। बापू किताब नहीं लाए। अभी–अभी समझने लग रही है घर की दशा । इसलिए दोबारा बापू से पूछ भी नहीं सके किताब क्यों नहीं लाए। शारदा के गोद में से भव्या को लेकर मोहन घर के अंदर चला गया।

मां के साथ काट पर बैठता हुआ बोला – डॉक्टर 2 दिन के बाद आएंगे तब मैं ले जाता हूं मां।अच्छा बेटा मेरी बाद में सोचो पहले थोड़ा खा लो । नहीं मां, शारदा अभी चावल बना रही है। पहले बच्चे खाने दो आप भी खा लो बाद में मैं खा लेता हूं। मोहन मां के बगल में से उठा और नीचे आंगन में लेट गया।

काट पर सोओ बेटा थक जाते हो। अपना ख्याल रखो। हम सब की देखभाल करते हो, अपना भी कुछ सोचो। मोहन मन में सोच रहा था कि– कल मालिक से 200 मांगना। मां को डॉक्टर के पास ले जाना है और दवाइयां भी खरीदना है। बेचारी रात भर खांसती रहती है। 3000 के वेतन में घर के किराया, बच्चों का देखभाल और मां की तबीयत इन सब से घर में खाने के लिए कम पड़ता है। सोचते सोचते थका हुआ मोहन को कब आंख लग गई पता नहीं।

भव्या आकर जब सीने पर बैठ गई तब अचानक मोहन की नींद खुली। सामने शारदा बहुत प्यार से पूछी– क्या सो गए हैं, बहुत काम होगा ना थक जाओगे। चलो सब खा लिए हम दोनों भी खा ले । इतने में मां बोली– चलो बेटा थोड़ा खा कर सो जाओ। खाली पेट नहीं सोते। शारदा भव्या को सासू मां के पास बिठाई। बाकी दो बच्चियां वहीं खेल रही हैं। मोहन खाते–खाते रुक गया। कुछ भी बोलो घर के भोजन की स्वाद ही कुछ अलग होती है। शारदा हंसती हुई कहती हैं– बड़े आए स्वाद का परख करने वाले। क्या कभी बाहर होटल में खाए हो..? नहीं –नहीं 2 दिन पहले राजू मुझे होटल ले गया था । लाख बार मना करने पर भी वह नहीं सुना। इतनी साग– सब्जियां होते हुए भी घर का भोजन घर का भोजन ही है। शरदा तुम तो जानती हो घर की हालत देखते हुए क्या मैं बाहर पैसे उड़ा सकता हूं ? यह बात सुनते ही शारदा के आंखों में आंसु उभर आई। बेचारा हर पल घर के बारे में सोचता रहता है। मोहन की चेहरे की ओर देखते हुए सोच में पड़ जाती हैं। इनके बिना जिंदगी ही सुना पड़ता है। आगे सोचने को डर लगता है। मोहन– थाली में भोजन रखकर क्या सोच रही हो..? बोलो ... शारदा चुप होकर भोजन करने लगी।रात की अंधेरा बढ़ रही है। इनके जीवन में अंधेरा कब मिटेगी?

★★★

दोपहर का समय है। चारों ओर कुछ हल्ला मच रही है।पड़ोसी के घर में रेडियो पर लगातार विषाद संगीत सुनाई दे रही है। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या हुई है। देश भर में दंगे फसाद हो रहे हैं। सब लोग कर्तव्य विमूढ़ होकर इधर–उधर घूम रहे हैं। देश में अभी दूरदर्शन का प्रचलन नहीं हुआ। इसलिए छोटे–मोटे शहरों में रेडियो ही इनके लिए सहारा है।

शारदा व्याकुल है कि– मोहन दोपहर भी भोजन के लिए नहीं आया। शारदा दरवाजे के पास खड़ी है पति के इंतजार में। इतने में मोहल्ले में कुछ युवक आ रहे थे। शारदा एक युवक को रोककर पूछी –क्यों भाग रहे हैं? वह

युवक हांफ्ते हुए कहां –कर्फ्यू लगी है। पुलिस गोलियां चला रही हैं। सब लोग तितर–बितर हो कर भाग रहे हैं। भीड़ में आपके पति भी था। क्या वह घर नहीं आया ?कहते हुए लड़का भाग गया।

शारदा इन बातों से डर गई। कुछ ही पल में गले में सन्नाटा छा गया। वह धीरे से चौराहे की ओर निकल पड़ी। उसका दिल कांप लगा था। वह मन– ही– मन मिन्नतें मानने लगी मोहन को कुछ ना हो जाए। उस समय किस– किस देवता को स्मरण कर रही हैं पता नहीं। कदम– कदम में यही चाहत है –पति सलामत रहे। वह चलते–चलते कितना दूर चली है पता नहीं। शहर के मुख्य चौराहे पर पहुंची । चौराहे पर सभी चीजें इधर–उधर पड़े हैं। किसी –किसी के चप्पल पड़े हैं और किसी की कपड़े की थैली पड़ी हुई है। कुछ तरकारियां इधर की उधर पड़ी हैं। दूर एक मोटरसाइकिल जल रही है। एक बूढ़ा दुकान के एक बूढ़ा दुकान के सीढ़ियों पर घायल हुआ पड़ा है। वह किसी की सहायता के लिए कमजोर आवाज में पुकार रहा है। उस धूप में और धुएं में शारदा को कुछ धुंधला सा दिखाई दे रही है। वह दो कदम डालकर उस बूढ़े को बचाने की सोच में पड़ी। फिर अपने पति को पहले ढूंढने की चाह से उस बूढ़े से आगे निकली। थोड़ी दूर जाने के बाद रास्ते के बीच में एक कार रुकी हुई है ।उस कार के आईने तोड़ दिए गए हैं।एक दरवाजा टूट पड़ी है। उस धुएं में कार के पीछे एक इंसान पड़ा हुआ है।

मोटर गाड़ी के धुएं से शारदा की आंखे जल रही थी। वह ठीक से देख नहीं पा रही थी। थरथर कांपते उसकी ओर जाने लगी।उसके कपड़े देखते हैं भागती हुई उसके पास पहुंची। वह और कोई नहीं मोहन ही है। जोर से चिल्लाते हुए पति को पलटाई।मोहन के कपड़े खून से भरे हुए थे। मोहन के चेहरे को हाथ में लेकर उसे जगाने की चेष्टा की। गोली सीने पर लगने से खून ज्यादा निकल जाने से इसकी सांस कप की गई।

शारदा अपने आप को संभाल नहीं पाई और जोर– जोर से रोने लगी। इधर–उधर किसी की सहायता के लिए ढूंढने लगी। वहां कोई नहीं था। शारदा के हृदय में से वेदना सीमा पार कर गई। वह फूट– फूट कर रोने लगी। बार–बार मोहन को पुकारते हुए हिला– हिला कर रो रही है। वह चाहती हैं– कहीं से जान आ जाए लेकिन विधि को कौन टालते हैं? रो–रो कर थकी जा रही है। कुछ करने को मन में सुझाव भी नहीं। वह पति को घर ले जाना चाहती हैं लेकिन कोई उस ओर आया भी नहीं।

दिल को पत्थर बनाकर मोहन को घर ले जाने की सोची। इतने में उस बूढ़े की याद आई। उसके पास जाकर देखी। उसके भी प्राण निकल गए। पति को घर ले जाने की सोच में ढूंढ रही थी। थोड़ी दूर एक शादी खाना के सामने देखी पिछले दिन हुई शादी के लिए नारियल पेड़ की डालियां बंदी नजर आई । वह सिसकते हुए अधसूखे दो नारियल पेड़ की डालियों को उतारी उन डालियों को खींच कर अपने पति के पास ले आई।

मोहन को उठाकर उन डालियों पर सुलाना चाहती थी लेकिन अबला अकेली कैसे कर पाती? बहुत मुश्किल से उन डालियों पर अपने पति के देह को रख पाई । एक ओर धूप में पसीना निकल रही है दूसरी ओर

उसके गालों पर आंसू बहती जा रही हैं। थोड़ी दूर अपने पति को खींचते ले चली। वह देखी धूप पति के चेहरे पर पड़ रहा है। हां वह मुर्दा है। फिर भी शारदा सह नहीं पा रही है। रास्ते में पड़ी उस कपड़े की थैली को ले आकर पति के चेहरे पर ढ़की । वह रोते–रोते इस प्रकार लाचार अपने पति को देखते एक–एक याद उसके ह्रदय के कोने में से उभरकर आंसुओं के रूप में बाहर आ रही हैं।

मोहन की आर्थिक स्थिति पहले से खराब थी लेकिन वह अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति बहुत प्यार दिखाता रहा। एक–एक स्मृति अब आंखों के सामने आंसुओं के कारण ओझल होते जा रही हैं। पत्नी के लिए प्रिया पति का बिछड़ना दिल पर चोट कर रही थी। ह्रदय का धड़कन प्रति पल मोहन की इस निष्ठुर सत्य को मानने को तैयार नहीं। ह्रदय की वेदना प्रति पल भेद रही है। अब कैसे जीऊं? पति के बिना एक कदम भी आगे दाल नहीं सकती। इस व्याकुलता से शारदा के कदम डगमगा रहे हैं।

वह बहुत मुश्किल से पति को खींचती ले जा रही है। पति का हाथ रास्ते में घसीटते ले जाने से चमड़ा छोटे–मोटे पत्थरों को लगाकर खून से लाल –लाल हो गया। यह देखकर शारदा तिल –मिल हुई। फिर पति के पास आकर उसके दो हाथ नारियल पेड़ की डालियों पर रखकर खींचे ले जा रही हैं। गरीब के सब दुश्मन होते हैं। इतने दुख में भी दिल तोड़कर खींचती जा रही है। सांस भी नहीं ले पा रही है.।हांफ रही है। उसके सीने में दु:ख के लहरे एक–एक कर किनारा पार कर रहे हैं। निस्सहाय, पति को छोड़ भी नहीं सकती और खींचने में असमर्थ, हाथ कमजोर पड़ते जा रहे हैं। सीने में दर्द पीछे मुड़कर अपने पति की और देखी। निश्चल पति के चेहरे पर से हवा के झोंके से थैली हटी। मोहन को देखते–देखते मन अचेतन हो रहा था ,पैर आगे न बढ़ पाए। लड़खड़ाते हुए वह जमीन पर यकायक बेहोश हो गई।

---

जी. पद्मजा,

PhD scholar, SV यूनिवर्सिटी, तिरुपति , आंध्रप्रदेश।